नौ

यीशु का पसंदीदा प्रचारक

Jesus' Favorite Preacher

आपको यह जानकर आश्चर्य हो सकता है कि यीशु का एक पसंदीदा प्रचारक था। आपको यह जानकर और भी आश्चर्य हो सकता है कि यीशु का पसंदीदा प्रचारक एक लूथरन मैथोडिस्ट, पेंटिकोस्टल, एंग्लिकन या प्रेसबिटेरियन नहीं था। इसके विपरीत, वह एक बैपटिस्ट था। हम उसे *यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले* के रूप में जानते हैं। यीशु ने उसके बारे में कहा,

> मैं तुम से सच कहता हूं, कि जो स्त्रियों से जन्में हैं, उनमें से यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले से कोई बड़ा नहीं हुआ (मत्ती 11:11अ)।

क्योंकि सभी लोग स्त्री से जन्में हैं, यह यीशु का अंदाज अपने में कहने का एक दूसरा तरीका था कि यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला एक महान व्यक्ति था। यीशु ने इसे अनुमान लगाने के विषय में क्यों अनुभव किया। तथापि, यह विचार करना उपयुक्त प्रतीत होता है कि यूहन्ना की आत्मिक योग्यताओं के कारण यीशु ने यूहन्ना के बारे में उच्च रूप से विचार किया। यदि ऐसा है, तो हमें भी उन आत्मिक योग्यताओं का अध्ययन कर उन्हें अपनाना चाहिए। मैंने यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले में सात प्रशंसनीय आत्मिक योग्यताएं पाई हैं। यद्यपि यूहन्ना की सेवकाई एक भविष्यद्वक्ता और प्रचारक की सेवकाई को प्रस्तुत करती है, तौभी सातों आत्मिक योग्यताएं सुसमाचार के प्रत्येक सेवक के लिये उपुयक्त हैं। आइये सात में से एक पर पहले विचार करें।

यूहन्ना की पहली योग्यता

John's First Quality

> यूहन्ना की गवाही यह है, कि जब यहूदियों ने यरूशेलम से याजकों और लेवियों को उस से यह पूछने के लिये भेजा, कि ''तू कौन

> है?'' तो उसने यह मान लिया, और इन्कार नहीं किया परन्तु मान लिया कि ''मैं मसीह नहीं हूं।'' तब उन्होंने उससे पूछा, ''तो फिर कौन है? क्या तू एलिय्याह है?'' उसने कहा, ''मैं नहीं हूं'' ''तो क्या तू वह भविष्यद्वक्ता है?'' उसने उत्तर दिया कि ''नहीं।'' तब उन्होंने उससे पूछा, ''फिर तू है कौन? ताकि हम अपने भेजने वालों को उत्तर दें, तू अपने विषय में क्या कहता है?'' उसने कहा, ''मैं जैसा यशायाह भविष्यद्वक्ता ने कहा है जंगल में एक पुकारने वाले का शब्द हूं कि 'तुम प्रभु का मार्ग सीधा करो।'' (यूहन्ना 1:19-23)।

यूहन्ना अपनी बुलाहट को जानता था और वह उसके पीछे-पीछे चला भी।

सेवकों के लिए अपनी बुलाहट को जानना और उसके पीछे जाना कितना महत्वपूर्ण है। यदि आप एक प्रचारक हैं तो आपको पास्टर बनने का प्रयास नहीं करना चाहिए। यदि आप एक शिक्षक हैं, तो आपको भविष्यद्वक्ता बनने का प्रयास नहीं करना चाहिए। अन्यथा, आपको निराशा ही होगी।

आप अपनी बुलाहट को कैसे जानते हैं। सबसे पहले, उस प्रभु को ढूंढने पर, जिसने आपको बुलाया है। दूसरा, अपनी प्रतिभा को जानने पर। यदि परमेश्वर ने आपको एक प्रचारक होने के लिए बुलाया है, तो वह उसे करने के लिए आपको तैयार (सुसज्जित) भी करेगा। और तीसरा, दूसरों द्वारा पुष्टि किये जाने पर, जो निश्चय ही आपकी प्रतिभा पर ध्यान देंगे।

एक बार आप अपनी बुलाहट के बारे में सुनिश्चित हो जाने पर आपको अपने पूरे मन से उसके पीछे जाना चाहिए, कि कोई भी बाधा आपको रोकने न पाए। बहुत से परमेश्वर के चारों ओर इस प्रतीक्षा में रहते हैं कि वह उनसे क्या कराना चाहता है। नूह ने जहाज़ का निर्माण करने के लिए परमेश्वर की प्रतीक्षा नहीं की!

ऐसा कहा जाता है कि 'सेवकाई' शब्द का अर्थ है– कार्य। शैतान निश्चय ही आपको आपकी बुलाहट को पूरा करने के लिए रोकेगा, लेकिन आपको उसका सामना करते हुए आगे बढ़ना होगा। यद्यपि धर्मशास्त्र हमें इस बारे में नहीं बताता, तौभी, आप आश्वस्त हो सकते हैं, कि कोई ऐसा दिन रहा होगा जब यूहन्ना ने 'पहली बार' यर्दन क्षेत्र में 'प्रचार' करना आरम्भ किया होगा। इसमें संदेह नहीं कि उसका पहला झुण्ड उसके बाद वाले झुण्ड से छोटा था। आप निश्चिंत हो सकते हैं कि लोगों ने उसका मज़ाक उड़ाया होगा और उसे सताव का सामना भी करना पड़ा होगा। लेकिन वह रुका नहीं। उसका एकमात्र उद्देश्य उस परमेश्वर को प्रसन्न करने का था जिसने उसे अपनी सेवकाई के लिए बुलाया था। अन्ततः, वह सफल हुआ।

यूहन्ना की पहली आत्मिक योग्यता जो हमारे नकल करने के योग्य है : *'यूहन्ना अपनी बुलाहट को जानता था और वह उसके पीछे-पीछे भी गया।'*

यूहन्ना की दूसरी योग्यता
John's Second Quality

> उन दिनों में यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला आकर यहूदिया के जंगल में यह प्रचार करने लगा कि ''मन फिराओ; क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आ गया है'' (मत्ती 3:1-2)।

यीशु ने निश्चय ही यूहन्ना के सरल संदेश को उपयुक्त ठहराया, इसी संदेश का प्रचार यीशु ने हर उस जगह किया जहां वह गया (देखें मत्ती 4:17)। यूहन्ना ने लोगों को पश्चात्ताप के लिए बुलाया जिसका अर्थ है– एक पाप के जीवन से फिर कर धार्मिकता के जीवन की ओर आना। वह जानता था कि परमेश्वर के साथ संबन्ध का आरम्भ पश्चात्ताप के साथ होता है, और पश्चात्ताप न करने वाले नरक जाएंगे।

इसके अतिरिक्त, अधिकांश आधुनिक प्रचारकों के प्रतिकूल, यूहन्ना ने कभी भी परमेश्वर के प्रेम का वर्णन नहीं किया, न ही उसने लोगों को एक ऐसे स्रोत के रूप में 'आवश्यकता को अनुभव कराया' जो 'यीशु को ग्रहण करने की' अर्थरहित प्रार्थना है जिससे वे 'बुहतायत के जीवन' का अनुभव करना आरम्भ कर सकें। उसने लोगों का यह विश्वास करने में नेतृत्व नहीं किया कि वे मूल रूप से ऐसे अच्छे लोग थे जिन्हें परमेश्वर उस दशा में स्वर्ग ले जाना चाहता था, यदि वे यह जान लें कि उद्धार कार्यों से नहीं। इसके विपरीत, उसने उन्हें वैसे देखा जैसे परमेश्वर उन्हें देखता है। उसने उन्हें केवल आनेवाले क्रोध के बारे में चिताया। उसने उन्हें यह समझाया कि यदि वे अपने मनों और कार्यों को नहीं बदलेंगे तो वे नाश हो जाएंगे।

अत:, यूहन्ना की दूसरी आत्मिक योग्यता जिसकी नकल करना प्रत्येक शिष्य-निर्माता सेवक के लिए उपयोगी है, वह है- *'यूहन्ना ने घोषणा की कि परमेश्वर के साथ संबन्ध में पश्चात्ताप पहला कदम है।'*

यूहन्ना की तीसरी योग्यता
John's Third Quality

> यह यूहन्ना ऊँट के रोम का वस्त्र पहिने था, और अपनी कमर में चमड़े का पटुका बान्धे हुए था, और उसका भोजन टिट्डियाँ और वनमधु था (मत्ती 3:4)।

यूहन्ना निश्चय ही आधुनिक 'सम्पन्नता के प्रचारक' की तस्वीर में सही नहीं बैठता। वे वास्तव में, यूहन्ना के समान व्यक्ति को अपनी कलीसिया में आने

की अनुमति कभी नहीं देंगे, क्योंकि उसने सफलता के वस्त्रों को धारणा नहीं किया था। तौभी, यूहन्ना परमेश्वर का सत्य जन था जिसकी दुनियावी खज़ाने के पीछे जाने या लोगों को अपने बाहरी दिखावे से आकर्षित करने में कोई रुचि नहीं थी। वह जानता था कि परमेश्वर मन को देखता है। उसने एक सरल जीवन जीया। उसका जीवन किसी के लिए भी ठोकर का कारण नहीं बना, क्योंकि वे स्वयं देख सकते थे कि उसका लक्ष्य धन नहीं था। यह संसार के अधिकांश आधुनिक सेवकों की तुलना में कैसे सही बैठता है, जो व्यक्तिगत लाभ के लिए सुसमाचार का प्रचार करते हैं और यीशु को गलत प्रस्तुत करने पर, मसीह के लिए बड़े नाश का कारण बनते हैं।

यूहन्ना की तीसरी योग्यता जिसने उसकी यीशु का पसंदीदा प्रचारक बनने में योगदान दिया, वह थी : 'यूहन्ना ने सरल जीवन जीया।'

यूहन्ना की चौथी योग्यता
John's Fourth Quality

> जो भीड़ की भीड़ उस से बपतिस्मा लेने को निकल कर आती थी, उनसे वह कहता था, ''हे सांप के बच्चों, तुम्हें किसने जता दिया, कि आनेवाले क्रोध से भागो। सो मन फिराव के योग्य फल लाओ : और अपने अपने मन में यह न सोचो, कि हमारा पिता इब्राहीम है; क्योंकि मैं तुमसे कहता हूं, कि परमेश्वर इन पत्थरों से इब्राहीम के लिये संतान उत्पन्न कर सकता है'' (लूका 3:7-8)।

जैसे जैसे यूहन्ना की सेवकाई ने लोगों का स्पर्श करना आरम्भ किया, उसने अपने संदेश के साथ समझौता नहीं किया। यूहन्ना लोगों के उद्देश्यों को लेकर संभवत: संदेही हो गया होगा, जब उसने ध्यान दिया कि बपतिस्मा लेना प्रचलित होता जा रहा था। यहां तक कि शास्त्री और फरीसी भी यात्रा करके यर्दन तक आ रहे थे (देखें मत्ती 3:7)। उसे भय था कि अधिकांश लोग केवल भीड़ के साथ ही चल रहे थे। इसलिए जहां तक हो सका उसने उन्हें स्वयं को धोखा देने वाली हर चीज़ से दूर रखा। उसने नहीं चाहा कि कोई भी यह सोचे कि बपतिस्मा लेने के द्वारा वह बच सकता है या यह कि पश्चात्ताप का कार्य उन्हें नरक से दूर रखेगा। उसने उन्हें चिताया कि सच्चा पश्चात्ताप आज्ञाकारिता के फल को लाता है।

इसके अतिरिक्त, क्योंकि अधिकांश यहूदी इब्राहीम की वंशावली से होने के कारण स्वयं को बचाया गया मानते थे, यूहन्ना ने उनके इस भ्रम को प्रगट किया।

यूहन्ना की चौथी प्रशंसनीय योग्यता है : *'उसने लोगों को सत्य बताने की सीमा*

तक प्रेम किया। उसने कभी किसी अपश्चात्तापी व अपवित्र व्यक्ति को आश्वासन नहीं दिया कि वह स्वर्ग के मार्ग पर है।'

यूहन्ना की पांचवीं योग्यता
John's Fifth Quality

यूहन्ना ने पश्चात्ताप न करने वाले लोगों को बपतिस्मा नहीं दिया होगा, किसी को आत्म-धोखे का सहारा न देते हुए। उसने लोगों को ''अपने पापों को मानने'' पर बपतिस्मा दिया (मत्ती 3:6)। उसने आनेवालों को चिताया :

> और अब कुल्हाड़ा पेड़ों की जड़ पर रखा हुआ है, इसलिये जो-जो पेड़ अच्छा फल नहीं लाता, वह काटा और आग में झोंका जाता है...उसका सूप उसके हाथ में है, और वह अपना खलिहान अच्छी रीति से साफ करेगा, और अपने गेहूं को तो खत्ते में इकट्ठा करेगा, परन्तु भूसी को उस आग में जलाएगा जो बुझने की नहीं (मत्ती 3:10-12)।

यूहन्ना नरक के बारे में सच्चाई को बताने से डरता नहीं था जो एक ऐसा विषय है जिसकी उपेक्षा प्राय: उन प्रचारकों द्वारा की जाती है जो परमेश्वर के राज्य के लिए प्राणों को जीतने के बजाय प्रसिद्धि प्राप्त करने की प्रतियोगिता में होते हैं। न ही यूहन्ना उस विषय की घोषणा करने में असफल हुआ जिसे हमने यीशु के पहाड़ी उपदेश में पाया था-केवल पवित्र लोग ही परमेश्वर के राज्य के अधिकारी होंगे। अच्छा फल न लाने वाले आग में डाले जाएंगे।

यदि यूहन्ना आज जीवित होता, तो उसे आज के दिखावटी मसीहियों द्वारा ''नरक की आग और गंधक वाले प्रचारक'' ''असंवेदनशील'', या उससे भी बुरा ''नकारात्मक'', ''विधिवादी'' या ''आत्म-धर्मी'' के रूप में दण्डित किया जाता। तौभी यूहन्ना यीशु का पसंदीदा प्रचारक था। उसकी पांचवीं योग्यता: *'यूहन्ना ने नरक के बारे में प्रचार किया और यह भी स्पष्ट किया कि किस तरह के लोग उस ओर जाने के मार्ग पर थे।'* रोचक है कि लूका ने यूहन्ना के संदेश को ''सुसमाचार'' के रूप में प्रस्तुत किया (लूका 3:18)।

यूहन्ना की छठी योग्यता
John's Sixth Quality

यूहन्ना को यद्यपि परमेश्वर द्वारा सामर्थी रूप में प्रयोग किया गया और वह लोगों में भी अधिक विख्यात हो गया था, वह जानता था कि वह यीशु की तुलना में कुछ भी नहीं था, और इसी कारण उसने हमेशा उसे अपने प्रभु के रूप में ऊंचा उठाया:

> मैं तो पानी से तुम्हें मन फिराव का बपतिस्मा देता हूं, परन्तु जो मेरे बाद आनेवाला है, वह मुझसे शक्तिशाली है, मैं उसकी जूती उठाने के योग्य नहीं; वह तुम्हें पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देगा (मत्ती 3:11)।

यूहन्ना द्वारा स्वयं को छोटा बनाना हमारे दिनों के ''सेवकों'' के घमण्ड की तुलना में कैसे बैठता है। उनकी सेवकाई की रंगीन पत्रिकाओं में प्रत्येक पृष्ठ पर उनका चित्र होता है, जबकि यीशु का बहुत कम ही वर्णन होता है। वे कलीसिया के चारों ओर मोर के समान चलते हैं, अपने अनुयायियों की दृष्टि में स्वयं को ऊंचाई पर रखते हुए। उन्हें न तो छुआ जा सकता है, और न ही उन तक पहुंचा जा सकता है, वे अपने आत्म-महत्व से भरे होते हैं। उनमें से कुछ तो स्वर्गदूतों और परमेश्वर को भी आज्ञा देते हैं। तौभी, यूहन्ना ने स्वयं को यीशु की जूती उठाने के योग्य भी न पाया, जिसे एक तुच्छ सेवक के कार्य के रूप में जाना जाता है। जब यीशु उससे बपतिस्मा लेने को आया तो उसने इसका विरोध किया, और यह जान लेने पर कि यीशु ही मसीह था, उसने उसकी ओर संकेत करते हुए सभी से कहा, ''यह परमेश्वर का मेमना है, जो जगत का पाप उठा ले जाता है'' (यूह. 1:29)। ''अवश्य है कि वह बढ़े और मैं घटूं'' (यूह. 3:30)– यूहन्ना का लक्ष्य बन गया था।

यह वह छठी योग्यता थी जिसने उसकी यीशु का पसंदीदा प्रचारक बनने में सहायता की थी। *'यूहन्ना ने स्वयं को दीन किया और यीशु को ऊंचा उठाया। उसमें स्वयं को ऊंचा उठाने की कोई इच्छा नहीं थी।'*

यूहन्ना की सातवीं योग्यता

John's Seventh Quality

आधुनिक प्रचारक प्राय: व्यर्थ की सामान्यताओं के बारे में बोलते हैं। यह प्रचार करना कितना आसान है, ''परमेश्वर चाहता है कि हम वही करें जो सही है!'' सच्चे और झूठे मसीही इस तरह के प्रचार के लिये ''आमीन'' कहेंगे। अधिकांश प्रचारक संसार के लज्जाजनक पापों का राग अलापना सरल पाते हैं, जबकि वे कलीसिया में पाए जाने वाले उसी तरह के पाप की उपेक्षा करते हैं। संभवत: वे अश्लीलता के विरुद्ध क्रोधित हों लेकिन वे यह नहीं बताते कि अनैतिक विडियो या डी वी डी को उनके अधिकांश याजकों द्वारा देखा व एकत्रित किया जाता है। मानव भय ने उन्हें फंसा लिया है।

तथापि, यूहन्ना 'विशिष्ट' रूप से यह प्रचार करने से हिचका नहीं।

> और लोगों ने उससे पूछा, ''तो हम क्या करें?'' उसने उन्हें उत्तर दिया, कि ''जिसके पास दो कुरते हों, वह उसके साथ जिसके

> पास नहीं है बांट दे और जिसके पास भोजन हो, वह भी ऐसा ही करे।'' और महसूल लेने वाले भी बपतिस्मा लेने आए, और उससे पूछा, कि ''हे गुरू, हम क्या करें?'' उसने उनसे कहा, ''जो तुम्हारे लिये ठहराया गया है, उससे अधिक न लेना।'' और सिपाहियों ने भी उस से यह पूछा, ''हम क्या करें?'' उसने उन से कहा, ''किसी पर उपद्रव न करना, और न झूठा दोष लगाना, और अपनी मज़दूरी पर संतोष करना'' (लूका 3:10-14)।

यह रोचक है कि यूहन्ना द्वारा दिये गए छह विशिष्ट निर्देशों में से पांच धन या भौतिक चीज़ों पर थे। यूहन्ना भण्डारीपन का प्रचार करने से नहीं डरा, जबकि इसका संबन्ध सुनहरे नियम और दूसरी सबसे बड़ी आज्ञा से था। न ही यूहन्ना ने वर्षों तक इंतज़ार किया, जब तक कि नये ''विश्वासी'' इस तरह के ''भारी-भरकम'' विषयों के लिए तैयार न हो जाते। उसने माना कि धन और परमेश्वर दोनों को प्रसन्न करना असंभव था, इसलिए भण्डारीपन आरम्भ से प्राथमिक महत्व का विषय था।

यह दूसरे विषय को लेकर आता है। यूहन्ना ने छोटी चीज़ों को बड़ा नहीं किया, लगातार परिधान तथा बाहरी दिखावे से संबन्धित पवित्रता के विषयों के लेकर। उसने ''व्यवस्था की गंभीर बातों'' पर ध्यान दिया (मत्ती 23:23)। वह जानता था कि सबसे अधिक महत्वपूर्ण अपने पड़ोसियों को अपने समान प्रेम करना और दूसरों के साथ वैसा ही व्यवहार करना है जैसा हम चाहते हैं कि वे हमारे साथ करें। इसका अर्थ है कि जिनके पास भोजन की कमी है उनके साथ अपने भोजन को बांटना, दूसरों के साथ निष्कपटता का व्यवहार करना और जो हमारे पास है उस पर संतोष करना।

यह वह सातवीं विशेषता थी जिसने यूहन्ना को यीशु का प्रिय बनाया। *'उसने बेकार की सामान्यताओं पर प्रचार नहीं किया, बल्कि उन चीज़ों का उल्लेख किया जिन्हें लोगों को परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए करना चाहिए, भण्डारीपन से जुड़ी चीज़ों का भी, और उसने उस पर ध्यान केन्द्रित किया जो सबसे महत्वपूर्ण था।*

अन्त में
In Conclusion

एक पास्टर या शिक्षक की सेवकाई को विषय के व्यापकता के आधार पर महत्व दिया जाता है जो यूहन्ना का लक्ष्य नहीं था। यूहन्ना ने अपश्चात्तापी लोगों में प्रचार किया। पास्टर या शिक्षकों से प्राथमिक रूप से, उन्हें शिक्षा देने की आशा की जाती है जिन्होंने पश्चात्ताप किया होता है। उनकी शिक्षा उन चीज़ों पर आधारित होती है

जो यीशु ने अपने शिष्यों से कहीं और जो नये नियम की पत्रियों में लिखी होती हैं।

तौभी, हम अपने श्रोताओं की सही पहचान करने में असफल हो जाते हैं, और ऐसा लगता है कि आज पापियों को ऐसे प्रचार किया जाता है मानो वे पहले धर्मी जन थे। लोगों के कलीसियाई इमारत में बैठने से यह निश्चित नहीं हो जाता है कि उनके उद्धार के लिए हमारा कार्य पूरा हो गया है। आज कलीसियाई मंचों से करोड़ों ''यूहन्ना बपतिस्मा देनेवालों'' के द्वारा प्रचार करने को पुकारने की ज़रूरत है। क्या इस चुनौती को पूरा करने के लिए आप उठेंगे? क्या आप यीशु के पसंदीदा प्रचारकों में से एक बनेंगे?